आप पकड़ तूं अपना, बल कर आंखां खोल।
दूध पानी दोऊ जाहेर, देख नीके तारतम बोल।।४।।

तू अपने आपको संभाल और हिम्मत करके आंखें खोल। अब तारतम वाणी से विचार कर देख, दूध और पानी (ब्रह्म और माया) दोनों जाहिर हो गए हैं।

पेहेले तो आंखां फूटियां, अब तो कछुक संभाल।
ए जासी अवसर हाथ से, पीछे होसी कौन हवाल।।५।।

पहले तो अज्ञानता थी। अब तो कुछ संभल। यह अवसर जब हाथ से निकल जाएगा तब तेरी क्या हालत होगी?

आगे उलटा हुआ अकरमी, अजहूं ना करे कछु सुध।
जागत नहीं क्यों जोर कर, ले हिरदे मूल बुध।।६।।

हे बदनसीब ! पहले भी तू विमुख रहा और अभी भी तुझे कुछ सुध नहीं आ रही। जागृत बुद्धि हृदय में लेकर, ताकत लगाकर क्यों नहीं जागता?

पुकार सुनी दोऊ पिउ की, वतन देखाया नजर।
उठी ना अंग मरोर के, अब आई नजीक फजर।।७।।

तुमने दोनों तनों से (श्री देवचन्द्रजी के तन की तथा श्री इन्द्रावतीजी के तन की) धनी की आवाज सुनी है। जिससे उन्होंने अपने घर की पहचान कराई है। फिर तू अंग मरोड़कर क्यों नहीं उठता? फजर (उषा काल) नजदीक आ गयी है।

तारतम देख विचार के, पिउ ल्याए बेर दोए।
एती आग सिर पर जली, तूं रह्या खांगडू होए।।८।।

तारतम वाणी से विचार करके देख। धनी तेरे लिए दो बार ज्ञान लेकर आए हैं। इतनी मार (वाणी की) सिर पर पड़ी, पर तू खांगडू मूंग की तरह गला नहीं।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ३२२ ॥

मेरे जीव अभागी रे, जिन भूले तूं अब।
इन मोहजल से काढ़न वाला, ऐसा ना मिलसी कोई कब।।१।।

हे मेरे बदनसीब जीव ! तू अब मत भूल। इस तरह से भवसागर से निकालने वाला कभी भी नहीं मिलेगा।

ए गुन तूं याद कर, जो किए अनेक सजन।
तूं क्यों सूता जीव अभागी, देकर साहेबी मन।।२।।

तू धनी की उन कृपाओं को याद कर, जो धनी ने हमारे ऊपर बेशुमार की हैं। फिर भी अभागे जीव! तू अपने अहंकार में क्यों सो रहा है?

Nijanand App

पेहेले तें काढ़े वचन, सो क्या मन की दोर।
बुध मन तेरे बैठे रेहेसी, जीव को क्रोध काढ़सी जोर।। ३ ।।

पहले तूने धनी के वियोग का वचनों से विलाप किया और गुण गिने, तो क्या वह मनगढंत थे? तेरे मन और बुद्धि बैठे ही रह जाएंगे और क्रोध अपनी ताकत से जीव को जगा देगा।

जीव तूं क्यों होत है निलज, तोहे अजूं ना लगे घाए।
याद करके पिउ को, क्यों ना उड़े अरवाए।। ४ ।।

हे जीव! तू इतना बेहया (निर्लज्ज) क्यों हो गया है? तुझे अभी भी चोट नहीं लगी? अपने धनी को याद करके अपने तन को छोड़ क्यों नहीं देता?

जो अब जीवरा भूलसी, तो देखी तेरी बिध।
काढ़ूंगी तुझे जोरसे, करके बुरी सनंध।। ५ ।।

हे जीव ! मैंने तेरी हकीकत देख ली है। यदि इस बार भी तू भूला तो तेरी बुरी दशा करके ताकत से निकाल दूंगी।

पेहेले तो तें बुरी करी, अब जिन चूके अवसर।
पिउ तोकों वतन में, बुलावत हैं हंसकर।। ६ ।।

हे जीव ! पहले भी तूने बहुत बुरा किया। अब मत भूलना। धनी तुम्हें प्रसन्न होकर घर बुला रहे हैं।

ससुई सो भी यों कहे, मैं हाथों अपना मार।
पुनों की बधाई में, देऊं कोट सिर उतार।। ७ ।।

वह ससुई (माया का जीव) भी इस तरह से कहती है कि जो भी मेरे प्रीतम पुनू के आने की बधाई देगा, उसको मैं अपने हाथों से अपना सिर करोड़ बार उतारकर दे दूंगी।

क्यों ना देखे ए वचन, भट परो मेरे जिउ।
तूं लेत निमूना किनका, तूं कौन कौन तेरा पिउ।। ८ ।।

हे जीव ! तुझे आग लग जाए। तू इन वचनों को क्यों नहीं देखता? नमूना भी किनका ले रहा है। तू कौन है और तेरा धनी कौन है? इसकी पहचान तो कर।

दुनियां चौदे भवन में, जो देखिए मूल अर्थ।
जो लेवे तेरा निमूना, ऐसा ना कोई समरथ।। ९ ।।

चौदह लोकों की इस दुनियां में यदि हकीकत से देखा जाए तो तेरा नमूना देखकर कोई चल नहीं सकता (क्योंकि तू धनी का अंग है)।

तूं निमूना माया जीव का, क्यों कर लेवे इत।
ए दाग तेरा क्यों छूट हीं, ए तुझे लाग्या जित।। १० ।।

हे मेरे जीव ! तू संसार के जीवों का नमूना क्यों लेता है? वैसी चाल क्यों चलता है? तेरे मत्थे पर जो कलंक लग जाएगा वह कैसे छूटेगा?

Nijanand App

अजूं सुध तोको न होत, तेरी क्यों हुई ऐसी रसम।
याद कर अपना वतन, जो तें सुनी बात खसम।। ११ ।।

तुझे अभी भी होश नहीं आता। तेरी ऐसी हालत क्यों हो गई? अपने धनी की जो बातें सुनी हैं उनसे अपने घर की बातें याद कर।

तूं भूल जात क्यों वचन, जो श्रीधाम धनी कहे आप।
एक आधा सुकन विचारते, तो पलक न छोड़े मिलाप।। १२ ।।

धाम-धनी ने अपने मुख से तुझे जो वचन कहे हैं, यदि उनमें से एक आधा वचन भी विचार कर ले तो तू एक क्षण के लिए भी धनी का साथ नहीं छोड़ेगा।

तोको कहूं अभागी अकरमी, जो जाग्या न एते सोर।
सात बेर तोको कहूं सोहागी, जो तूं उठे अंग मरोर।। १३ ।।

हे अभागे बदनसीब जीव ! इतना जगाने पर भी तू नहीं जागा? अब भी तू अंग मरोड़कर जाग जाए तो तुझे सात बार सौभाग्यशाली (सुहागी) कहूंगी।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ३३५ ।।

मेरे जीव सोहागी रे, जिन छोड़े पिउ कदम।
दूसरी बेर माया मिने, तुझ कारन आए खसम।। १ ।।

हे मेरे सुहागी (सौभाग्यशाली) जीव ! अब प्रीतम के चरण नहीं छोड़ना। तेरे वास्ते ही धनी माया में दूसरी बार आये हैं।

गुन धनी के याद कर, पकड़ पिउ के पाए।
सुखे बैठ सुखपाल में, देसी वतन पोहोंचाए।। २ ।।

अब धनी की कृपा (मेहरबानी) को याद कर। उनके चरण पकड़ ले, वह तुझे सुखपाल में बैठाकर घर (परमधाम) पहुंचा देंगे।

खेल हंस कर बातड़ी, पेहेचान अपना पिउ।
दो बेर धनी तुझ कारने, आए जान अपना जिउ।। ३ ।।

तुम हंसते खेलते हुए अपने धनी को पहचानो और उनसे बातें करो। धनी तुम्हें अपना जानकर दो बार माया में आए हैं।

हैं कैसे धनी देख तूं, तोसों करी है ज्यों।
आप ना रख्या आपना, सो याद न कीजे क्यों।। ४ ।।

उन्होंने तेरे पर जो एहसान किए हैं, उससे उनकी पहचान कर। उन्होंने अपनापन भी अपने पास नहीं रखा। उसको क्यों याद नहीं करता?

कर हिंमत बांध कमर, ले हुकम सब हाथ।
पिउ पास हो पेहेचान के, और छोड़ सब साथ।। ५ ।।

उठ, हिम्मत कर। कमर कसकर धनी के हुकम को अपने सिर चढ़ा और पिया की पहचान कर माया के सब साथियों को छोड़ दे।

Nijanand App